E-ISSN: 2664-603X
P-ISSN: 2664-6021
IJPSG 2023; 5(2): 184-186
www.journalofpoliticalscience.com
Received: 23-09-2023
Accepted: 26-10-2023

Reetu
Kurukshetra University, Haryana, India

Corresponding Author:
Reetu
Kurukshetra University, Haryana, India

भारतीय नेतृत्व की गतिशीलता

Reetu

सारांश
शासन करना, निर्णय लेना, निर्देशन करना आज्ञा देना आदि सब एक कला है, इसके साथ-साथ एक कठिन तकनीक भी है । परन्तु अन्य कलाओं की तरह यह भी एक नैसर्गिक गुण है। वास्तविकता यह है कि नेतृत्व का तात्पर्य इनमें से किसी एक व्यवहार से नहीं है बल्कि नेतृत्व व्यवहार का वह ढंग होता है जिसमें एक व्यक्ति दूसरों के व्यवहार से प्रभावित न होकर अपने व्यवहार से दूसरों को अधिक प्रभावित करता है। भले ही यह कार्य दबाव द्वारा किया गया है अथवा व्यक्तिगत सम्बंधी गुणों को प्रदर्शित करके किया गया हो। जिस नेता में लगन, दृढ़ता, दृढ़ संकल्प और अच्छे संचार कौशल हैं वह अपने समूह में भी इन्हीं गुणों को उभर कर ले आते हैं। अच्छे नेता अपने आतंरिक गुणों का प्रयोग करते हुए अपने दल और संगठनों को सफलता प्रदान कराते हैं।

कुटशब्द: व्यक्तित्व, व्यवहार, कार्यशैली, योजना, प्रशासनिक दृढ़ता, कूटनीति, संचार कौशलता, विचार विमर्श इत्यादि

प्रस्तावना
दुनिया महत्वाकांक्षी राजनीतिक नेताओं से भरी हुई है, लेकिन दुख की बात है कि अच्छे नेतृत्व के गुणों के मुकाबले बहुत कम लोग हैं। वास्तव में, ऐसा प्रतीत होता है कि कई राजनीतिक नेताओं में एक अच्छे नेता के कुछ सबसे आवश्यक गुणों, जैसे सत्यनिष्ठा और जवाबदेही, की भारी कमी है। यह कोई संयोग नहीं है कि "राजनीतिज्ञ" शब्द के कई नकारात्मक अर्थ हैं। लेकिन अनुभव हमें बताता है कि केवल कुछ ही लोग हैं जो नेतृत्व के सिद्धांतों के करीब आते हैं और एक सफल राजनीतिक नेता के मजबूत संकेतक दिखाते हैं।

राजनीतिक नेता महत्वपूर्ण हैं: वे सरकारी नीतियों के माध्यम से शक्ति और धन के आवंटन का निर्धारण करते हैं, अन्य हितधारकों के साथ साझेदार स्थापित करते हैं, और ऐसे निर्णय लेते हैं जो देश और उसके नागरिकों की भलाई पर बड़ा प्रभाव डाल सकते हैं।

राजनीतिक नेतृत्व के लिए एक नेता की आवश्यकता होती है कि वह किसी भी अल्पकालिक व्यक्तिगत लाभ से ऊपर और परे, देश की दीर्घकालिक बेहतरी पर ध्यान केंद्रित करे।

मजबूत राजनीतिक नेतृत्व के लिए आकर्षण और ईमानदारी के मिश्रण और किसी परिस्थिति का मूल्यांकन करने और बहुमत के लिए क्या बेहतर होगा, इसके आधार पर निर्णय लेने की क्षमता की आवश्यकता होती है।

इंदिरा, राजीव, वाजपेयी-आडवाणी की वह तीन भूलें जिसने बदली भारतीय राजनीति की दिशा

इंदिरा ने इमरजेंसी में आरएसएस को निशाना बनाकर उसे राजनीतिक वैधता प्रदान करने; राजीव ने 1989 में जनादेश का सम्मान नहीं करने; वाजपेयी-आडवाणी ने समय से पहले चुनाव करवाने की जो गलतियां की उन्होंने भारतीय राजनीति की दिशा बदली.अटल बिहारी वाजपेयी और लालकृष्ण आडवाणी द्वारा मध्य प्रदेश, राजस्थान और छत्तीसगढ़ में भारी बहुमत से चुनाव जीतने से उत्साहित होकर आम चुनाव समय से छह महीने पहले करवाना.

पहला सवाल यह हो सकता है: इमरजेंसी थोपे जाने को आपने सबसे बड़ी राजनीतिक भूल क्यों नहीं माना? आरएसएस के काडर को निशाना बनाने और जेल में डालने को इतना अहम कैसे मान लिया? इन सवालों का जवाब सीधा-सा है. इंदिरा गांधी इमरजेंसी लगाने की तोहमत से जल्द ही बरी हो गईं, 1977 में उनकी हार मामूली झटका बनकर रह गई. तीन साल के अंदर ही वे भारी बहुमत के साथ सत्ता में लौट आईं. इमरजेंसी के बाद के 46 वर्षों में से 25 साल अगर उनकी पार्टी सत्ता में रही, तो साफ है कि जनता ने इमरजेंसी वाली उनकी भूल माफ कर दी.

1990 का दशक: भाजपा का उदय

यह दशक भाजपा के विकास के लिए महत्वपूर्ण था। मंडल आयोग और राम जन्मभूमि जैसे सामाजिक-राजनीतिक मुद्दों से प्रभावित होकर, 1991 में 10वीं लोकसभा चुनाव में, भाजपा का प्रतिनिधित्व बढ़कर 120 सीटों तक पहुंच गया और उसका वोट शेयर बढ़कर 22.5 प्रतिशत हो गया, जो लगभग 200 मिलियन लोगों के समर्थन को दर्शाता है। समय। इस बीच, कांग्रेस को 244 सीटें और 36.4 वोट मिले।

1996 तक, भाजपा लोकसभा में सबसे बड़ी पार्टी बन गई थी, हालाँकि उसकी सरकार अल्पकालिक थी। पार्टी लगातार बढ़ती रही और 29.7 प्रतिशत वोट शेयर तक पहुंच गई, जो लगभग 291.54 मिलियन लोगों का प्रतिनिधित्व करती है, क्योंकि कांग्रेस का वोट शेयर घटकर 25.8 प्रतिशत रह गया। 1996 के चुनावों में भाजपा 161 सीटों के साथ सबसे बड़ी पार्टी बन गयी। हालाँकि, अटल बिहारी वाजपेयी की सरकार केवल 13 दिनों तक चली, जिसके कारण त्रिशंकु संसद बनी।

लोग मोदी को अपनी समस्याओं को हल करने वाला मसीहा भी मानते हैं. दिल्ली के थिंक टैंक सेंटर फॉर द स्टडी ऑफ डेवलपिंग सोसायटीज (सीएसडीएस) के एक सर्वे के मुताबिक बीजेपी के हर तीसरे मतदाता का कहना है कि अगर मोदी प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार नहीं होते तो वे अपना वोट किसी दूसरी पार्टी को देते. दरअसल, इंदिरा गांधी के बाद मोदी भारत के सबसे लोकप्रिय नेता साबित हुए हैं. वाशिंगटन के कारनेजी इंडोमेंट फॉर इंटरनेशनल पीस के सीनियर फेलो मिलन वैष्णव कहते हैं, "इससे आप अंदाजा लगा सकते हैं कि यह वोट बीजेपी से ज़्यादा मोदी के लिए है. यह चुनाव सबकुछ छोड़कर मोदी के नेतृत्व के बारे में था."

विकास और राष्ट्रवाद का कॉकटेल

राष्ट्रवाद, धार्मिक धुव्रीकरण और जनकल्याण की कई योजनाओं के आपसी गठजोड़ ने नरेंद्र मोदी को लगातार दूसरी बार जीत दिलाई है.

एक तरह से कटुता भरे और समाज को बांटने वाले चुनावी अभियान में मोदी ने राष्ट्रवाद और विकास के कॉकटेल को मुद्दा बनाया. उन्होंने समाज को दो वर्गों में पेश किया, एक वे जो उनके समर्थक हैं, वो राष्ट्रवादी हैं और जो उनके राजनीतिक विरोधी, आलोचक हैं उन्हें उन्होंने एंटी नेशनल कहा.

मोदी ने खुद को चौकीदार कहा, देश की ज़मीन, हवा और बाहरी अंतरिक्ष, सबकी सुरक्षा करने वाला बताया और जबकि मुख्य विपक्षी कांग्रेस पार्टी को भ्रष्टाचारी बताया.

इसके साथ उन्होंने विकास का वादा भी दोहराया. मोदी ने ग़रीबों को ध्यान में रखकर जनकल्याण योजनाएं शुरू कीं, जिनमें ग़रीबों के लिए मकान, शौचालय, क्रेडिट, और कुकिंग गैस की व्यवस्था शामिल थीं. तकनीक के इस्तेमाल से इसे जल्द लागू किया गया.

हालांकि इन सुविधाओं की गुणवत्ता और यह ग़रीबी दूर करने में कितना कामयाब रहा, इसपर बहस संभव है.

अल्पसंख्यक, आंतरिक सुरक्षा, रोजगार, महंगाई या फिर हाल में उभरे एफडीआई जैसे किसी भी मामले पर इस देश में बहस खूब हुई है। एक स्वस्थ बहस तभी हो सकती है, जब सोच बहुत साफ हो और उद्देश्य बड़े हों। मगर हर बार यही देखने को मिला है कि हर किसी ने अपने नफे-नुकसान को देखकर ही बहस को मोड़ा है। कुछ कदम उठे हैं, तो उनके पूरे फायदे इसलिए नहीं मिले कि हम हर बार मूल सिद्धांत से भटके हैं।

पार्टियों ने हर विषय को अपने नजरिये से देखा है, यह नहीं सोचा कि आखिर व्यापक स्तर पर देश हित में क्या होना चाहिए। चुनाव प्रक्रिया या पुलिस की कार्यप्रणाली में सुधार की बहस हो, तो राजनीतिक दलों में कहीं न कहीं हिचक रहती है। मसलन, जस्टिस वर्मा कमेटी की सिफारिश में यही संकेत है कि महिला सुरक्षा के मामले में बहुत गंभीरता से कभी सोचा ही नहीं गया।

संदर्भ सूची

1. अमर उजाला, 25 जनवरी 2013
2. शेखर गुप्ता: दिप्रिंट 10 फरवरी, 2024
3. Gautam R. Politics in India: The dynamics of formation of coalition government. Impact: International Journal of Research in Humanities, Arts and Literature (Impact: IJRHAL). 2018;6:167-172.
4. इंडियन टुडे, 2019
5. BBC. Coalition government in India: [online] 25 May 2019. Available at: www.bbc.com. [Accessed 23 November 2024].
6. Appaiah P. Coalition government in India: NDA vs UPA. Indian Journal of Political Science. 2008;3:23-9.
7. Malik FA, Malik BA. Politics of coalition in India. Journal of Power, Politics & Governance. 2014;2(1):1-11.
8. International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR). Volume 5, Issue 4, July-August 2023. E-ISSN: 2582-2160. Available at: www.ijfmr.com. [Accessed 23 November 2024].
9. Basu K, Biswas SD, Harish P, Dhar S, Lahiri M. Is multi-party coalition government better for the protection of socially backward classes in India? Wider Working Paper. 2016;2016/109:1-18.